महामत कहे मदीने से, लिखे खलीफों पर फुरमान।
उठी दुनी बरकत सफकत फकीरों, और कलाम अल्ला ईमान।। ४० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मदीने से इस्लाम के खलीफों ने वसीयतनामे औरगंजेब पर लिखे कि मदीने से बरकत, फकीरों के आशीर्वाद देने की शक्ति, कुरान और ईमान (नूरी झण्डा) उठ गया है।

॥ प्रकरण ॥ १३ ॥ चौपाई ॥ ७२५ ॥

झण्डा सरीयतका उठ्या

कह्या झण्डा उठ्या ईमानका, कौल किया जिन सरत।
महंमद मेंहेंदी इमाम आए, लिखे आए नामें वसीयत।। १ ।।

मदीने से वसीयतनामे लिखकर आए हैं कि रसूल साहब के बताए अनुसार इमाम मेंहेंदी ग्यारहवीं सदी में हिन्दुस्तान में प्रगट हो गए हैं, इसलिए यहां से ईमान उठ गया है।

यों हादी लिखे कर जाहेर, दिन देखाए देवें कयामत।
सो लिखे सखत सौं खाए के, सो भी वास्ते इन बखत।। २ ।।

इस तरह से रसूल साहब ने कुरान में स्पष्ट लिखा है कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी आखिर में आकर कयामत को जाहिर करेंगे। यह बात सख्त कसम खाकर वसीयतनामे में ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी के प्रगट होने की बात के लिए लिखा।

मेहेनत करी महंमद ने, और असहाबों यार।
झण्डा खड़ा किया दीन का, तले आई दुनी बे सुमार।। ३ ।।

रसूल साहब, उनके यार तथा अनुयायियों ने बड़ी मेहनत से शरीयत का झण्डा मदीने में खड़ा किया जिसके नीचे बेशुमार दुनियां आई।

दुनियां जो जैसी हुती, सो तिसी विध लई समझाए।
तोरा किया सिर सबन के, दई सरीयत राह चलाए।। ४ ।।

उस समय दुनियां जिन विचारों की थी, उसे उसी तरह से समझाया और सबके ऊपर हुकूमत से शरीयत का रास्ता चलाया।

अग्यारै सदी लग अमल, चल्या सरीयत का।
सो फरदा रोज सदी बारहीं, कोल पोहोंच्या फजर का।। ५ ।।

शरीयत का यह नियम ग्यारहवीं सदी तक चला। मुहम्मद साहब ने कल के दिन का वायदा किया था। वह बारहवीं सदी आ गई और वायदे के अनुसार मारफत का ज्ञान आ गया।

सो नूर झण्डा बीच हिंद के, किया खड़ा नूर इसलाम।
इत आई सब न्यामतें, और आया अल्ला कलाम।। ६ ।।

वह नूरी झण्डा मदीने से उठाकर हिन्दुस्तान के बीच पन्नाजी में खड़ा किया और निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर किया। (नूर इस्लाम) अब परमधाम की सब न्यामतें मदीने से उठकर पन्नाजी में आ गई और कुलजम सरूप की पूरी वाणी आ गई।

Nijanand App

तो दरगाह से खादिम बुजरकों, लिखे सखत सौं खाए।
सो जमाना सदी अग्यारहीं, किने न देख्या दिल ल्याए।।७।।

जब मदीने से वहां के पूजकों ने कसम खाकर फर्दा रोज ग्यारहवीं सदी में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के प्रगट होने की बात वसीयतनामे में लिखी, परन्तु शरीयत और हुकूमत के नशे में चूर किसी शरीयत के काजी या औरंगजेब ने ध्यान नहीं दिया।

करी अव्वल लिख इसारतें, दूजे लिख्या केहेर देखाए।
तीसरे उठाया झण्डा आकीन, चौथे हिन्द में खड़ा किया आए।।८।।

पहले कुरान में कयामत की बातें इशारतों में लिखीं। फिर दूसरी बार खुदा का डर बतलाया। तीसरी बार मदीने से झण्डा और यकीन उठने की बात लिखी। चौथी बार जबराईल फरिश्ते ने हकीकी झण्डा हिन्दुस्तान में खड़ा करने की बात लिखी।

लिख्या अपने हाथों तेहेकीक, गईं चारों हक न्यामत।
सिर देखें राह गजब की, क्यों न अजूं आवत।।९।।

वहां के पूजकों ने निश्चित करके अपने हाथों से लिखा कि मदीने से चारों खुदाई न्यामतें चली गईं। फिर भी जाहिर परस्त दुनियां वाले अभी तक इन्तजार में बैठे हैं कि कयामत में लिखा हुआ प्रलय क्यों नहीं आ रही है?

जाहेरी कहें अजूं न आइया, हक सेती गजब।
आकीन बिना देखे नहीं, जो छीन लिया मता सब।।१०।।

जाहिरी लोग (कर्मकाण्ड वाले) सोचते हैं कि खुदा की तरफ से कयामत क्यों नहीं आई? क्योंकि इनसे सारी न्यामतें छिन गई हैं और यकीन न होने से यह बात अब उनकी समझ में आती नहीं है।

दुनी बरकत सफकत फकीरों, और लिया छीन कुरान।
बाकी इसलाम में क्या रह्या, जो रह्या न काहू ईमान।।११।।

दुनियां की बरकत, फकीरों की शफकत, कुरान और ईमान जब छीन लिए गए तो मुसलमानों में बचा ही क्या?

अजूं राह देखे गजब की, जानें हुआ नहीं फुरमाया।
इसलाम मता सब से गया, तो भी नजरों किनहूं न आया।।१२।।

मुसलमान कहते हैं कि रसूल साहब के कहे अनुसार अभी तक प्रलय क्यों नहीं हुई? इन सबके अन्दर से सब न्यामतें चली गईं, इसलिए रसूल साहब की बातें समझ में नहीं आ रही हैं।

जुदे पड़े राह बीच रात के, जिद फितने खोया आकीन।
तो दुनी बरकत सफकत फकीरों, हक कलाम लिए छीन।।१३।।

आपस के लड़ाई-झगड़ों में सभी ने रसूल साहब की बातों से यकीन खो दिया और अलग-अलग होकर अज्ञान के रास्ते पर चल पड़े, इसलिए इनके पास से बरकत, फकीरों की शफकत और कुरान के ज्ञान को छीन लिया।

Nijanand App

ईमान बिना देखे नहीं, रही या गई न्यामत।
नफा नुकसान तो देखहीं, जो होए इसलाम लज्जत।। १४ ।।

अब मुसलमानों के पास ईमान नहीं रहा, इसलिए उन्हें यह समझ नहीं आता कि यह न्यामतें उनके पास हैं या चली गईं? इस्लाम का जरा भी यकीन इनके अन्दर हो तो अपना नफा-नुकसान क्या है की पहचान हो सकती है।

सुध न पाइए बिना लज्जत, नफा या नुकसान।
निसबत रहे ना जुबान की, जहां हक मारफत नहीं पेहेचान।। १५ ।।

जब तक धर्म पर यकीन नहीं होगा, तब तक लाभ और हानि की पहचान नहीं हो सकती। जब तक श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के ज्ञान से कुजलम सरूप साहब की वाणी की पहचान नहीं होगी, तब तक वहां की बोलने की कुछ शक्ति नहीं होती।

अजूं चाहे दुनियां माजजा, देखे ना खड़ा झण्डा नूर।
तब उत थें अक्स पुकारिया, कहे हुए इसलाम से दूर।। १६ ।।

दुनियां वाले अभी भी चमत्कार की राह देख रहे हैं। उन्हें कुलजम सरूप की वाणी का नूरी झण्डा दिखाई नहीं देता, जबकि मदीने से लोग पुकार-पुकारकर कह रहे हैं कि यहां से इस्लाम धर्म उठ गया।

फजर हुए खुले हकीकत, खुलें हकीकत होए कयामत।
हुए हक बका अर्स जाहेर, सूर उग्या दिन मारफत।। १७ ।।

कुरान की हकीकत के भेद खुलने से ज्ञान का सवेरा होगा और दुनियां की कायमी हो गई। जब श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम की जानकारी हो गई, तब समझ लो मारफत के ज्ञान का सूर्य उदय हो गया।

फुरमान जबराईल ल्याइया, बरारब से बीच हिंद।
आए नूर झण्डा खड़ा किया, गया कुफर फरेबी फंद।। १८ ।।

जबराईल फरिश्ता बरारब से कुरान हिन्दुस्तान ले आया और कुलजम सरूप की वाणी का नूरी झण्डा पन्नाजी में खड़ा किया, जिससे सारे झूठ मिट गए।

सरा चल्या हक हुकमें, किया कौल जिन सरत।
सो आए पोहोंची सदी बारहीं, भई फरदा रोज कयामत।। १९ ।।

श्री राजजी महाराज के हुकम से इतने दिन तक शरीयत चली। उसके बाद कल के दिन का जो वायदा किया था, वह बारहवीं सदी आ गई है। इसके लिए रसूल साहब ने फर्दा रोज कहा था।

यों झण्डा नूर बिलंद का, किया खड़ा हक हादी मोमिन।
देखावे नामे वसीयत, नूर हिंद में बरस्या रोसन।। २० ।।

इस तरह से श्री राजजी, श्री श्यामाजी और मोमिनों ने कुलजम सरूप साहब का नूरी झण्डा खड़ा कर दिया, जिसकी गवाही वसीयतनामे दे रहे हैं। उन्होंने लिखा है कि खुदा की मेहर हिन्दुस्तान में बरस रही है।

मुसाफ मता महंमदी मोमिनों, पोहोंच्या वारसी आखिरी इमाम।
झण्डा पोहोंच्या अर्स अजीम लग, देखाए हक बका अर्स तमाम।। २१ ।।

कुरान के ज्ञान का रहस्य खोलने का अधिकार आखिरी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को था, अतः वह ज्ञान श्री प्राणनाथजी और मोमिनों के पास पहुंच गया। अब इस कुलजम सरूप साहब की वाणी का झण्डा परमधाम तक पहुंचा। यह अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज की पहचान करा रहा है।

Nijanand App

अर्स देखाया चढ़ उतर, हुआ मेयराज महंमद पर।
क्यों दुनी देखे दिल मजाजी, बिन खोले रूह नजर।। २२ ।।

रसूल मुहम्मद ने मेयराज में परमधाम के आने-जाने का रास्ता बताया। अब इस झूठे दिल वाले दुनियां के जीव आत्मदृष्टि के बिना कैसे समझें?

जेता अर्स दिल मोमिन, बिन मेयराज न काढ़ें बोल।
बिन पूछे देवें सब को, अर्स अजीम पट खोल।। २३ ।।

जिन मोमिनों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अर्श कहा है, वह अब श्री राजजी महाराज की वाणी से सबको बिना पूछे ही परमधाम की पहचान कराते हैं।

करने हैयात सबन को, देवें हक इलम बेसक।
सो पोहोंचे बका बीच भिस्त के, नूर नजर तले हक।। २४ ।।

सारे जगत को अखण्ड करने के लिए यह कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान दे रहे हैं। इस वाणी के द्वारा ही सब जीव अक्षर की नजर योगमाया की बहिश्तों में अखण्ड होंगे।

जो आया झण्डे तले महंमदी, सो तबहीं कायम होत।
देख्या सब हक दिल मता, हुई अर्स अजीम बीच जोत।। २५ ।।

श्री प्राणनाथजी के इस नूरी झण्डे के नीचे जो आ गया, उसे तुरन्त ही अखण्ड मुक्ति प्राप्त हो जाती है। उसे श्री राजजी महाराज के दिल की सारी बातों का अनुभव हो जाता है और परमधाम की पहचान हो जाती है।

अपनी सूरत देखी अर्स की, जो रूहें तले हक कदम।
जब सूर ऊग्या हक मारफत, तब सब आए तले हुकम।। २६ ।।

रूहें जो श्री राजजी महाराज के चरणों के तले मूल-मिलावा में बैठी हैं, उन्होंने अपनी परआतम को देख लिया। जब कुलजम सरूप की वाणी (मारफत का ज्ञान) सूर्य की तरह प्रकाशित हो गयी, तब सभी इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के हुकम अनुसार चलने लगे।

महामत कहे ए मोमिनों, कही दो झण्डों की बिगत।
अब खोल देऊं फरदा रोज की, जो फुरमाई थी इसारत।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैंने दो झण्डों की हकीकत की पहचान कराई है। अब जो कुरान में फर्दा रोज का भेद लिखा है, उसे खोल देती हूं।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ७५२ ।।

बाब फरदा रोज का

फरदा रोज पेहेले कह्या, ए जो बखत कयामत।
एक दिन एक रात की, फजर है आखिरत।। १ ।।

कुरान में पहले से लिखा है कि कल के दिन कयामत होगी। जब एक दिन और एक रात बीते तो आखिरत की फजर हो जाएगी।

Nijanand App